सूरह — एक कहानी

सूरह यूसुफ़

यूसुफ़

पूरा सफ़र — सब से ख़ूबसूरत कहानी —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 12 • 111 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

नह्नु नक़ुस्सु 'अलैक अह्सनल्-क़ससि बिमा औहैना इलैक हाज़ल्-क़ुरआन
3. हम तुम्हें सब से बेहतरीन कहानी सुनाते हैं इस क़ुरआन की वही के ज़रिए।

फ़-सब्रुन जमील; वल्लाहुल्-मुस्त'आनु 'अला मा तसिफ़ून
18. तो सब्र ही बेहतर है, और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह ही से मदद माँगी जाती है।

क़ाल म'आज़ल्-लाह; इन्नहू रब्बी अह्सन मस्वाय
23. उसने कहा: अल्लाह की पनाह! बेशक वो मेरा मालिक है, उसने मेरा ठिकाना अच्छा बनाया।

क़ाल रब्बिस्-सिज्नु अहब्बु इलय्य मिम्मा यद्'ऊननी इलैह
33. उसने कहा: मेरे रब, क़ैद मुझे उस से ज़्यादा प्यारी है जिसकी तरफ़ ये मुझे बुला रही हैं।

व ला तै-असू मिर्-रौहिल्-लाह
87. और अल्लाह की रहमत से मायूस मत हो।

ला तस्रीब 'अलैकुमुल्-यौम; यग़्फ़िरुल्-लाहु लकुम
92. आज तुम पर कोई मलामत नहीं; अल्लाह तुम्हें बख़्श दे।

सब से बेहतरीन कहानी

बेटा, ये सूरह क़ुरआन की किसी दूसरी सूरह जैसी नहीं। **ये वाहिद है जो एक ही कहानी शुरू से आख़िर तक, तरतीब से, एक ही जगह सुनाती है।** और अल्लाह ने ख़ुद इसका ता'रुफ़ कराया:

'**नह्नु नक़ुस्सु 'अलैक अह्सनल्-क़ससि बिमा औहैना इलैक हाज़ल्-क़ुरआन** — **हम तुम्हें सब से बेहतरीन कहानी सुनाते हैं इस क़ुरआन की वही के ज़रिए जो हमने तुम्हारी तरफ़ की** — **व इन कुन्त मिन क़ब्लिही ल-मिनल्-ग़ाफ़िलीन** — हालाँकि तुम इस से पहले बे-ख़बर थे।'

बेटा, रिवायत है कि ये सूरह मक्की सालों के सब से सख़्त दौर में उतरी — उस वक़्त

के आस-पास जब नबी ﷺ ने अपने चचा और अपनी बीवी को खोया, और उनकी अपनी क़ौम उन के ख़िलाफ़ साज़िशें कर रही थी। और अल्लाह ने उन्हें एक ऐसे आदमी की कहानी भेजी जिसे उसके अपने भाइयों ने धोका दिया, कुएँ में डाला गया, बेचा गया, क़ैद किया गया — **और फिर एक ऐसे मुक़ाम पर उठाया गया जिसका उन में से कोई तसव्वुर भी न कर सकता था।**

बेटा, ये सूरह अल्लाह का जवाब है हर उस शख़्स के लिए जिस पर उसके अपने लोग ज़ुल्म कर रहे हों और उसे नज़र न आता हो कि ये कभी ठीक कैसे हो सकता है।

'इज़ क़ाल यूसुफ़ु लि-अबीहि या अबति इन्नी र-अैतु अहद 'अशर कौकबंव्-वश्-शम्स वल्-क़मर र-अैतुहुम ली साजिदीन — जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा: ऐ मेरे प्यारे अब्बा, मैंने ग्यारह सितारे और सूरज और चाँद देखे — मैंने उन्हें अपने लिए सजदा करते देखा।'

और याक़ूब (अलैहि0) फ़ौरन समझ गए कि इसका मतलब क्या है, और अपने बेटे को इस सूरह की पहली हिकमत दी:

'क़ाल या बुनय्य ला तक़्सुस रुअ्याक 'अला इख़्वतिक फ़-यकीदू लक कैदा — ऐ मेरे प्यारे बेटे, अपना ख़्वाब अपने भाइयों को मत सुनाना, वरना वो तेरे ख़िलाफ़ एक चाल चलेंगे।'

बेटा, ये सीखिए। **हर अच्छी चीज़ जो तुम्हारे साथ हो उसे एलान करने की ज़रूरत नहीं।** एक बाप जो अपने बेटों को जानता था उसने अपने सब से छोटे से कहा: इसे अपने पास रखो।

बेटा, हमारे दौर में ये पहले से कहीं ज़्यादा मौज़ूँ है। वो ऑफ़र जो तुम्हें मिला, वो मंसूबा जिस पर तुम काम कर रहे हो, वो अच्छी ख़बर जब तक तय न हो जाए — **कुछ चीज़ों को पूरा होने तक ख़ामोशी की हिफ़ाज़त चाहिए।**

'इन्नश्-शैतान लिल्-इंसानि 'अदुव्वुम्-मुबीन — बेशक शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।'

कुआँ

'**इज़ क़ालू ल-यूसुफ़ु व अख़ूहु अहब्बु इला अबीना मिन्ना व नह्नु 'उस्बह** — जब उन्होंने कहा: **यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा महबूब हैं, जब कि हम एक पूरा जत्था हैं** — **इन्न अबाना ल-फ़ी ज़लालिम्-मुबीन** — बेशक, हमारा बाप खुली ग़लती में है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए ये कहाँ से शुरू होता है: नफ़रत से नहीं, बल्कि **मुक़ाबले** से। **वो हम से ज़्यादा महबूब है।** यही वो जगह है जहाँ ज़ेहर दाख़िल होता है — वो लम्हा जब एक शख़्स किसी दूसरे को दी गई मोहब्बत नापना शुरू करता है।

'**उक़्तुलू यूसुफ़ अविर्-तरूहु अर्ज़ंय्यख़्लु लकुम वज्हु अबीकुम** — **यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या उसे किसी ज़मीन में फेंक दो, ताकि तुम्हारे बाप का चेहरा तुम्हारे लिए ख़ाली हो जाए** — **व तकूनू मिम्-ब'अ्दिही क़ौमन सालिहीन** — और तुम उस के बाद नेक लोग बन जाना।'

बेटा, उस आख़िरी जुमले को ग़ौर से देखिए, क्योंकि वो सब से ख़ौफ़नाक बात है जो उन्होंने कही। **उन्होंने एक क़त्ल का मंसूबा बनाया और बाद में तौबह का भी मंसूबा बनाया। गुनाह का शेड्यूल, और मग़्फ़िरत का फ़र्ज़ कर लिया जाना।**

उन में से एक ने क़त्ल के बजाए कुएँ की तजवीज़ दी। और वो अपने बाप के पास एक ऐसी दरख़्वास्त ले कर गए जिसने हर दौर में वालिदैन को धोका दिया है: कल उसे हमारे साथ जाने दीजिए, हम उसका ख़याल रखेंगे।

और याक़ूब ने एक क़ाबिल-ए-ज़िक्र बात कही: '**क़ाल इन्नी ल-यह्ज़ुनुनी अन तज़्हबू बिही व अख़ाफ़ु अंय्यअ्कुलहुज़्-ज़िअ्बु व अन्तुम 'अन्हु ग़ाफ़िलून** — मुझे ये ग़मज़दा करता है कि तुम उसे ले जाओ, और **मुझे डर है कि कोई भेड़िया उसे खा जाए** जब कि तुम उस से बे-ख़बर हो।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: **उन्होंने ख़ुद उन्हें बहाना दे दिया।** और उस शाम वो वही बहाना ले कर वापस आए, हर्फ़ ब हर्फ़: '**फ़-अकलहुज़्-ज़िअ्ब**' — भेड़िये ने उसे खा लिया।

'**व जाऊ 'अला क़मीसिही बि-दमिन कज़िब** — **और वो उसकी क़मीज़ पर झूटा ख़ून**

ले आए।'

और अब, बेटा, बाप का जवाब — और यहाँ दो जुमले हैं जो हर मोमिन को याद कर लेने चाहिए:

'क़ाल बल सव्वलत लकुम अन्फ़ुसुकुम अम्रा — उसने कहा: बल्कि, तुम्हारे नफ़्सों ने तुम्हारे लिए एक बात को ख़ूबसूरत बना दिया — फ़-सब्रुन जमील — तो सब्र ही बेहतर है, ख़ूबसूरत सब्र — वल्लाहुल्-मुस्त'आनु 'अला मा तसिफ़ून — और जो तुम बयान करते हो उस पर अल्लाह ही से मदद माँगी जाती है।'

बेटा, '**सब्रुन जमील**' — **ख़ूबसूरत सब्र**। उलमा ने इसे यूँ समझाया: ऐसा सब्र जिसमें लोगों से शिकायत न हो, घबराहट न हो, तल्ख़ी न हो — **ग़म जो वक़ार के साथ उठाया जाए।**

बेटा, उन्हें अभी अभी बताया गया था कि उनका महबूब बेटा मर गया, और उन्होंने उन पर चीख़ा नहीं न उन्हें बद्-दुआ दी। उन्होंने कहा: ख़ूबसूरत सब्र, और अल्लाह ही से मदद माँगी जाती है।

और यूसुफ़, इस दौरान, एक गुज़रते हुए क़ाफ़िले ने कुएँ से निकाल लिया, और बेचा गया — '**व शरौहु बि-समनिम्-बख़्सिन दराहिम म'अ्दूदह** — और उन्होंने उसे एक घटिया क़ीमत पर बेचा, चंद दिरहम — **व कानू फ़ीहि मिनज़्-ज़ाहिदीन** — और वो उसके बारे में कम पर राज़ी होने वालों में से थे।'

बेटा, **उन्होंने एक आने वाले नबी को मुट्ठी भर सिक्कों में बेचा क्योंकि वो जानते ही नहीं थे कि उनके हाथ में क्या है। लोग अक्सर तुम्हारी क़ीमत उतनी ही लगाएँगे जितनी उन्हें दिखाई दे।**

'अज़ीज़ के घर में

उसे मिस्र में एक ओहदे-दार आदमी ने ख़रीदा, जिसने अपनी बीवी से कहा: '**अक्रिमी मस्वाहु 'असा अंय्यन्फ़'अना औ नत्तख़िज़हू वलदा — इसका ठिकाना इज़्ज़त से रखो; शायद ये हमें फ़ायदा दे, या हम इसे बेटा बना लें।'**

'**व कज़ालिक मक्कन्ना लि-यूसुफ़ फ़िल्-अर्ज़ि व लि-नु'अल्लिमहू मिन तअ्वीलिल्-अहादीस** — और यूँ हमने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमाया, ताकि हम उसे वाक़िआत की ताबीर सिखाएँ — **वल्लाहु ग़ालिबुन 'अला अम्रिही व लाकिन्न अक्सरन्-नासि ला यअ्लमून — और अल्लाह अपने मामले पर ग़ालिब हैं, मगर ज़्यादा तर लोग नहीं जानते।**'

बेटा, उस लाइन पर निशान लगाइए: 'वल्लाहु ग़ालिबुन 'अला अम्रिह' — अल्लाह अपने मामले पर **ग़ालिब** हैं। **भाइयों ने एक मंसूबा बनाया। अल्लाह का एक मंसूबा था। उनका मंसूबा उसके मंसूबे की सवारी बना।**

और फिर, बेटा, वो आज़माइश आती है जिसके लिए ये सूरह सब से ज़्यादा मशहूर है — और ये एक ऐसे नौजवान की आज़माइश है जो अकेला है, बिना ख़ानदान के, एक बंद घर में।

'**व रावदत्हुल्-लती हुव फ़ी बैतिहा 'अन नफ़्सिही व ग़ल्लक़तिल्-अब्वाब व क़ालत हैत लक** — और जिस औरत के घर में वो था उसने **उसे अपनी तरफ़ माइल करना चाहा, और उसने दरवाज़े बंद कर दिए** और बोली: **आ जा।**'

बेटा, उसके हालात पर ग़ौर कीजिए। वो जवान था। वो ख़ूबसूरत था। वो एक ग़ुलाम था जिसका कोई हिफ़ाज़त करने वाला न था। दरवाज़े बंद थे, तो कोई गवाह न था। उस औरत का उसपर ज़ोर था — उसका एक लफ़्ज़ उसे तबाह कर सकता था। और दुनिया में कभी किसी को पता न चलता।

हर बहाना जो एक इंसान चाह सकता है उसके पास मौजूद था।

'**क़ाल म'आज़ल्-लाह — उसने कहा: मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ — इन्नहू रब्बी अह्सन मस्वाय** — बेशक, वो मेरा मालिक है, उसने मेरा ठिकाना अच्छा बनाया — **इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्-ज़ालिमून** — बेशक, ज़ालिम कामयाब नहीं होते।'

बेटा, '**म'आज़ल्-लाह**' — अल्लाह मेरी पनाह है। **दो लफ़्ज़। यही उसका पूरा दिफ़ा' था, और ये काफ़ी था।**

और देखिए वो आगे क्या कहता है: वो कुछ उस आदमी की वफ़ादारी की वजह से

इनकार करता है जिसने उस के साथ अच्छा सुलूक किया। बेटा, **वो मेहरबानी का बदला धोके से देना न चाहता था, उस शख़्स से भी नहीं जिसने उसे ख़रीदा था।**

'**व लक़द हम्मत बिही व हम्म बिहा लौला अर्-रआ बुर्हानि रब्बिह** — और उसने यक़ीनन उसका इरादा किया, और वो भी माइल हो जाता **अगर वो अपने रब की दलील न देख लेता — कज़ालिक लि-नस्रिफ़ 'अन्हुस्-सू-अ वल्-फ़ह्शा — यूँ हमने उस से बुराई और बे-हयाई फेर दी — इन्नहू मिन 'इबादिनल्-मुख़्लसीन — बेशक, वो हमारे चुने हुए, ख़ालिस बंदों में से था।**'

बेटा, इस आयत पर उलमा ने तफ़्सील से गुफ़्तगू की है, और बहुत से मुहक़्क़िक़ उलमा ने इसे उस तरह समझाया जैसा अल्फ़ाज़ इजाज़त देते हैं: कि उसके रब की 'बुरहान' उस तक आ गई और किसी माइल-पन को बनने ही न दिया — **अल्लाह ने उसकी हिफ़ाज़त की।** और आयत ख़ुद वजह बयान करती है: क्योंकि वो 'मुख़्लसीन' में से था, उन लोगों में से जिन्हें अल्लाह ने अपने लिए पाक कर लिया।

बेटा, और यही तुम्हारी हिफ़ाज़त भी है। **सिर्फ़ इरादे की ताक़त नहीं — इख़्लास। जो शख़्स वाक़ई अल्लाह का हो जाए वही शख़्स है जिसकी अल्लाह हिफ़ाज़त करते हैं।**

'**वस्तबक़ल्-बाब व क़द्दत क़मीसहू मिन दुबुरिन** — और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े, और **उसने उसकी क़मीज़ पीछे से फाड़ दी।**' बेटा, उसने उस से बहस नहीं की। **वो भाग निकला।** यही ख़्वाहिश से निपटने की सुन्नत है: **फ़ासला, फ़ौरन।**

उसका शौहर दरवाज़े पर था, और उसने फ़ौरन यूसुफ़ पर इल्ज़ाम लगा दिया। और उसके अपने घरवालों में से एक गवाह ने दलील दी: अगर क़मीज़ सामने से फटी है तो वो सची है; अगर पीछे से, तो उसने झूठ कहा और ये भाग रहा था। **वो पीछे से फटी थी।**

'**इन्नहू मिन कैदिकुन्न इन्न कैदकुन्न 'अज़ीम** — बेशक, ये तुम औरतों की चाल से है; तुम्हारी चाल बड़ी है।' और उसके शौहर ने यूसुफ़ से कहा: '**अअ्रिज़ 'अन हाज़ा**' — इस से मुँह मोड़ लो — और उस औरत से कहा कि माफ़ी माँगे।

बेटा, ग़ौर कीजिए: हक़ीक़त सामने आ गई, और फिर भी इंसाफ़ न हुआ। **कभी बे-गुनाह साबित हो जाना और इंसाफ़ मिल जाना एक चीज़ नहीं होती।**

क़ैद मुझे ज़्यादा प्यारी है

कहानी शहर की औरतों में फैल गई, और उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया। तो उसने उन्हें बुलाया, हर एक को एक छुरी और कुछ फल दिया, और उसे अंदर बुलाया।

'**फ़-लम्मा र-अैनहू अक्बर्नहू व क़त्तअ्न ऐदियहुन्न** — और जब उन्होंने उसे देखा, **वो उस से बेहद मुतअस्सिर हुईं और अपने हाथ काट बैठीं — व क़ुल्न हाश लिल्लाहि मा हाज़ा बशरन इन हाज़ा इल्ला मलकुन करीम** — और बोलीं: **अल्लाह पाक है! ये इंसान नहीं; ये तो एक मो'अज़्ज़ज़ फ़रिश्ता है।**'

और फिर उसने उन सब के सामने खुले-आम इक़रार कर लिया, और उसे धमकी दी: '**व ल-इल्-लम् यफ़्'अल मा आमुरुहू ल-युस्जनन्न व ल-यकूनम्-मिनस्-साग़िरीन — और अगर इसने वो न किया जो मैं हुक्म देती हूँ, तो ये ज़रूर क़ैद किया जाएगा और ज़लीलों में से होगा।**'

बेटा, अब उसका सामना एक बंद दरवाज़े के पीछे एक औरत से नहीं है। **उसका सामना उन के एक पूरे कमरे से है, और क़ैद की खुली धमकी से।**

और उसका जवाब, बेटा, क़ुरआन की अज़ीम दुआओं में से एक है:

'**क़ाल रब्बिस्-सिज्नु अहब्बु इलय्य मिम्मा यद्'ऊननी इलैह — उसने कहा: मेरे रब, क़ैद मुझे उस से ज़्यादा प्यारी है जिसकी तरफ़ ये मुझे बुला रही हैं — व इल्ला तस्रिफ़ 'अन्नी कैदहुन्न असबु इलैहिन्न व अकुम्-मिनल्-जाहिलीन — और अगर तू इन की चाल मुझ से न फेरे, तो मैं इन की तरफ़ माइल हो जाऊँगा और जाहिलों में से हो जाऊँगा।**'

बेटा, इस दुआ के दोनों हिस्से देखिए।

पहले: उसने **क़ैद चुनी**। उसने एक लम्हे की ना-फ़रमानी पर बरसों की कोठरी को तरजीह दी। बेटा, **यही मतलब है अल्लाह से अपने हालात से ज़्यादा डरने का।**

और **दूसरे** — और यही हिस्सा है जो मैं चाहता हूँ आप ग़ौर करें — उसकी आजिज़ी देखिए। **वो ये नहीं कहता 'मैं इतना मज़बूत हूँ कि मुक़ाबला कर लूँगा'। वो कहता है: अगर तू इनकी चाल मुझ से न फेरे, तो मैं माइल हो सकता हूँ।**

बेटा, यही एक ऐसे आदमी की निशानी है जो अपने आप को समझता है। **वो जानता था कि उसकी अपनी ताक़त वो चीज़ नहीं जो उसकी हिफ़ाज़त कर रही थी। उसने अल्लाह से माँगा कि हिफ़ाज़त वो करें।**

बेटा, तो कभी ये मत कहिए 'मैं तो कभी उस में नहीं पड़ सकता'। वही कहिए जो यूसुफ़ ने कहा: **या अल्लाह, इसे मुझ से फेर दे।**

'**फ़स्तजाब लहू रब्बुहू फ़-सरफ़ 'अन्हु कैदहुन्न — तो उसके रब ने उसकी सुन ली और उन की चाल उस से फेर दी।**'

और वो क़ैद कर दिया गया, बेटा — **बे-गुनाह साबित होने के बाद।**

सलाख़ों के पीछे दा'वत

दो नौजवान उसके साथ क़ैद में दाख़िल हुए, और हर एक ने एक ख़्वाब देखा। और वो ताबीर के लिए उसके पास आए — '**इन्ना नराक मिनल्-मुह्सिनीन**', हम तुम्हें नेकी करने वालों में से देखते हैं।

बेटा, इसे ग़ौर कीजिए: **क़ैद में भी उसका किरदार इतना ज़ाहिर था कि अजनबी लोग मदद के लिए उसके पास आए।**

और देखिए उसने उस मौक़े का क्या किया। उन्होंने ख़्वाबों के बारे में पूछा। और जवाब देने से पहले, **उसने उन्हें पैग़ाम दिया:**

'**या साहिबयिस्-सिज्नि अ अर्बाबुम्-मुतफ़र्रिक़ून ख़ैरुन अमिल्-लाहुल्-वाहिदुल्-क़ह्हार — ऐ क़ैद के मेरे दो साथियो, क्या अलग अलग रब बेहतर हैं, या अल्लाह, जो एक है, ग़ालिब है? मा तअ्बुदून मिन दूनिही इल्ला अस्मा-अन सम्मैतुमूहा अन्तुम व आबाउकुम** — तुम उसके सिवा उन **नामों** के सिवा किसी की इबादत नहीं करते जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए — **इनिल्-हुक्मु इल्ला लिल्लाहि अमर अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याह — हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का है; उसने हुक्म दिया कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो — ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्न अक्सरन्-नासि ला यअ्लमून** — यही सीधा दीन है, मगर ज़्यादा तर लोग नहीं जानते।'

बेटा, ग़ौर कीजिए उसने उन्हें कैसे मुख़ातिब किया: 'या साहिबयिस्-सिज्न' — **ऐ क़ैद के मेरे दो साथियो।** 'ऐ क़ैदियो' नहीं। **उसने नर्मी से अपने आप को उन के साथ शामिल किया।**

और फिर उसने उनके ख़्वाबों की ईमानदारी से ताबीर दी, उस ख़्वाब समेत जिसका मतलब फाँसी था।

और उसने उस से कहा जो रिहा होने वाला था: '**उज़्कुर्नी 'इन्द रब्बिक**' — अपने मालिक से मेरा ज़िक्र करना। '**फ़-अन्साहुश्-शैतानु ज़िक्र रब्बिही फ़-लबिस फ़िस्-सिज्नि बिज़्'अ सिनीन** — मगर शैतान ने उसे अपने मालिक से ज़िक्र करना भुला दिया, और यूसुफ़ **कई साल** क़ैद में रहा।'

बेटा, **कई और साल।** बे-गुनाह होने के बाद। मदद करने के बाद। उस वाहिद शख़्स के भुला देने के बाद जो उसके लिए बोल सकता था।

बेटा, कहानी के इस हिस्से को थामे रखिए जब आपको लगे कि आपकी कोशिश कहीं नहीं पहुँची। **वो कहीं नहीं ना पहुँची थी। अभी वक़्त नहीं आया था।**

सात मोटी गायें

फिर बादशाह ने सात मोटी गायें देखीं जिन्हें सात दुबली खा रही थीं, और अनाज की सात हरी बालियाँ और सात सूखी। उसके मुशीरों ने इसे परेशान ख़्वाब कहा। और रिहा हुए क़ैदी को आख़िर-कार याद आया।

यूसुफ़ ने बिना झिझक ताबीर दी — सात साल काश्त, फिर सात साल सख़्त क़हत — और, बेटा, ग़ौर कीजिए: **उसने सिर्फ़ ताबीर नहीं दी। उसने एक पॉलिसी दी।**

'**क़ाल तज़्र'ऊन सब्'अ सिनीन द-अबा** — तुम सात साल मुसलसल काश्त करोगे — **फ़-मा हसत्तुम फ़-ज़रूहु फ़ी सुम्बुलिही इल्ला क़लीलम्-मिम्मा तअ्कुलून** — **और जो काटो उसे उसकी बाली में ही रहने दो**, सिवाए थोड़े के जो तुम खाओगे।'

बेटा, वो तफ़्सील — अनाज को छिलके में रहने दो — **अमली ज़ख़ीरा-अंदोज़ी का मशवरा है**: अनाज बिना गाहे कहीं ज़्यादा देर ठहता है। **उसने सिर्फ़ ख़्वाब नहीं**

समझाया; उसने उन्हें एक मंसूबा थमा दिया जो एक क़ौम को बचा सकता था।

बादशाह ने उसे लाने का हुक्म दिया। और यहाँ, बेटा, वो लम्हा है जो इस आदमी के मेयार को दिखाता है।

'**फ़-लम्मा जा-अहुर्-रसूलु क़ालर्-जि' इला रब्बिक फ़स्अल्हु मा बालुन्-निस्वतिल्-लाती क़त्तअ्न ऐदियहुन्न** — और जब क़ासिद उसके पास आया, **उसने कहा: अपने मालिक के पास लौट जा और उस से पूछ कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे — इन्न रब्बी बि-कैदिहिन्न 'अलीम** — बेशक, मेरा रब उनकी चाल को जानने वाला है।'

बेटा, बरसों कोठरी में रहने के बाद, दरवाज़ा खुलता है — **और वो बाहर नहीं निकलता। वो कहता है: पहले मेरा नाम साफ़ करो।**

बेटा, यही वक़ार है। **वो क़ैद से एक मशकूक आदमी बन कर निकलना न चाहता था। वो बे-गुनाह हो कर बाहर आना चाहता था, सिर्फ़ आज़ाद नहीं। कुछ चीज़ों के लिए कुछ और दिन इंतेज़ार करना वाजिब है।**

औरतों से पूछा गया और उन्होंने हक़ीक़त मान ली, और 'अज़ीज़ की बीवी ने खुले-आम इक़रार किया: '**अल-आन हस्हसल्-हक़्क़ अना रावत्तुहू 'अन नफ़्सिही व इन्नहू ल-मिनस्-सादिक़ीन — अब हक़ वाज़ेह हो गया। मैंने ही उसे अपनी तरफ़ माइल करना चाहा था, और बेशक वो सच्चों में से है।**'

और यूसुफ़ का तब्सिरा, बेटा, अपने ही नफ़्स पर कभी भरोसा न करने का सबक़ है: '**व मा उबर्रिउ नफ़्सी इन्नन्-नफ़्स ल-अम्मारतुम्-बिस्सू-इ इल्ला मा रहिम रब्बी — और मैं अपने नफ़्स को बरी नहीं क़रार देता; बेशक नफ़्स बुराई का बहुत हुक्म देने वाला है, सिवाए उस के जिस पर मेरा रब रहम करे।**'

बेटा, **वो आदमी जिसने वो सब झेला जो उसने झेला, खुले-आम बरी होने के बाद भी अपनी तारीफ़ करने से इनकार कर देता है।**

बादशाह ने कहा: उसे मेरे पास लाओ; मैं उसे ख़ास अपने लिए मुक़र्रर करूँगा। और उस से बात करने के बाद: '**इन्नकल्-यौम लदैना मकीनुन अमीन** — बेशक, आज

तुम हमारे पास मुक़ाम वाले, अमानतदार हो।'

'क़ालज्-'अल्नी 'अला ख़ज़ा-इनिल्-अर्ज़ि इन्नी हफ़ीज़ुन 'अलीम — उसने कहा: मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर मुक़र्रर कर दीजिए; बेशक मैं हिफ़ाज़त करने वाला, जानने वाला हूँ।'

बेटा, दो चीज़ें ग़ौर कीजिए। **उसने ख़ज़ाने और ग़ल्ले की तक़्सीम का ओहदा माँगा — आने वाले क़हत में सब से मुश्किल काम, सब से आराम-देह नहीं।** और उसने अपनी सलाहियतें ईमानदारी से बयान कीं: अमानतदार और इल्म वाला। **ये ग़ुरूर नहीं; ये एक आदमी का अपनी सलाहियत के बारे में सच कहना है जब काम की ज़रूरत हो।**

'व कज़ालिक मक्कन्ना लि-यूसुफ़ फ़िल्-अर्ज़ — और यूँ हमने यूसुफ़ को उस ज़मीन में जमाया — यतबव्वउ मिन्हा हैसु यशा — कि वो उस में जहाँ चाहे रहे — **नुसीबु बि-रहमतिना मन नशा** — हम अपनी रहमत जिसे चाहें पहुँचाते हैं — **व ला नुज़ी'उ अज्रल्-मुह्सिनीन — और हम नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते।'**

बेटा, एक कुएँ की तह से मिस्र के ख़ज़ाने तक। और याद रखिए: **कुआँ, ग़ुलामी और क़ैद उस मंज़िल से हट कर रास्ते न थे। वो उस तक का रास्ता थे।**

भाई लौट आते हैं

क़हत आया, और भाई ग़ल्ले के लिए मिस्र गए — और उसके सामने खड़े थे। **'फ़-'अरफ़हुम व हुम लहू मुन्किरून — और उसने उन्हें पहचान लिया, जब कि वो उसे ना पहचान सके।'**

बेटा, उस लम्हे का तसव्वुर कीजिए। **वो आदमी जिन्होंने उसे कुएँ में फेंका था उसके सामने खड़े हैं, उस से खाना माँग रहे हैं, इस से बिल्कुल बे-ख़बर कि वो कौन है। उसका उन पर मुतलक़ इख़्तियार था।**

और उसने क्या किया? उसने उन्हें पूरा नाप दिया, और कहा कि अगली बार अपने बाप के पास से अपने भाई को लाएँ।

उसने बिन्यामीन को अपने पास रोकने का इंतेज़ाम एक ऐसे मंसूबे से किया जो अल्लाह ने उसे सिखाया — '**कज़ालिक किद्ना लि-यूसुफ़**', यूँ हमने यूसुफ़ के लिए तदबीर की — और आयत बढ़ाती है: '**मा काना लि-यअ्ख़ुज़ अख़ाहु फ़ी दीनिल्-मलिकि इल्ला अंय्यशा-अल्लाह** — वो बादशाह के क़ानून के तहत अपने भाई को न ले सकता था, मगर ये कि अल्लाह चाहें।'

'**नर्फ़'उ दरजातिम्-मन नशा — हम जिसे चाहें दर्जों में बुलंद करते हैं — व फ़ौक़ कुल्लि ज़ी 'इल्मिन 'अलीम — और हर इल्म वाले के ऊपर एक और ज़्यादा जानने वाला है।**'

बेटा, वो आख़िरी जुमला याद कर लीजिए। **कोई जितना भी जानता हो, उसके ऊपर हमेशा कोई होता है — और उन सब के ऊपर, अल-'अलीम।**

भाई बिन्यामीन के बग़ैर याक़ूब के पास लौटे। और उनका जवाब, बेटा, वही है जो दहाइयों पहले था: '**फ़-सब्रुन जमील — तो ख़ूबसूरत सब्र — 'असल्-लाहु अंय्यअ्तियनी बिहिम जमी'आ** — शायद अल्लाह उन्हें **सब के सब** मेरे पास ले आएँ।'

बेटा, इसे देखिए: 'जमी'आ' — उन **सब** को। **अपने ग़म में, वो उस की वापसी की भी उम्मीद कर रहे थे जिसे वो तीस या चालीस साल पहले खो चुके थे। उन्होंने कभी उम्मीद करना बंद नहीं किया।**

'**व तवल्ला 'अन्हुम व क़ाल या असफ़ा 'अला यूसुफ़ वब्यज़्ज़त 'ऐनाहु मिनल्-हुज़्नि फ़-हुव कज़ीम** — और वो उन से मुँह मोड़ कर बोले: **हाय यूसुफ़ पर मेरा अफ़सोस — और उनकी आँखें ग़म से सफ़ेद हो गईं, और वो उसे दबाए हुए थे।**'

बेटा, वो इतना रोए कि उनकी बसारत चली गई। और 'कज़ीम' — **वो उसे अंदर ही रोक रहे थे, लोगों पर निकाल नहीं रहे थे।**

उनके बेटों ने कहा: अल्लाह की क़सम, आप यूसुफ़ को याद करना न छोड़ेंगे यहाँ तक कि आप ग़लत हो जाएँ या मर जाएँ। और उनका जवाब, बेटा, इस पूरी सूरह के सब से अहम जुमलों में से एक है:

'**क़ाल इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्-लाह — उसने कहा: मैं तो अपनी बे-**

क़रारी और अपना ग़म सिर्फ़ अल्लाह से कहता हूँ — व अअ्लमु मिनल्-लाहि मा ला तअ्लमून — और मैं अल्लाह की तरफ़ से वो जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।'

बेटा, यही 'सब्रुन जमील' का अस्ल मतलब था। **इसका मतलब कभी ये न था कि उन्हें ग़म न हुआ — वो इतना रोए कि अंधे हो गए। इसका मतलब ये था कि उन्होंने शिकायत सही पते पर पहुँचाई।**

बेटा, फ़र्क़ समझिए। **अल्लाह की शिकायत लोगों से करना मायूसी है। अल्लाह से अपनी हालत की शिकायत करना इबादत है।** तुम रो सकते हो, कह सकते हो कि तकलीफ़ होती है, सब कुछ उंडेल सकते हो — जब तक तुम इसे उन के सामने उंडेल रहे हो।

और फिर उन्होंने उन्हें एक ऐसी हिदायत के साथ वापस भेजा जो हर ना-उम्मीद लम्हे का तोड़ है:

'या बनिय्यज़्-हबू फ़-तहस्ससू मिंय्यूसुफ़ व अख़ीहि व ला तै-असू मिर्-रौहिल्-लाह — ऐ मेरे बेटो, जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई के बारे में मालूम करो, और अल्लाह की रहमत से मायूस मत हो — इन्नहू ला यै-असु मिर्-रौहिल्-लाहि इल्लल्-क़ौमुल्-काफ़िरून — बेशक, अल्लाह की रहमत से सिवाए काफ़िर क़ौम के कोई मायूस नहीं होता।'

बेटा, दहाइयाँ गुज़र चुकी थीं। हर अक़्ल वाले शख़्स ने वो फ़ाइल बंद कर दी थी। **और एक बूढ़ा नाबीना आदमी कहता है: जाओ और ढूँढो, और मायूस मत हो।**

आज तुम पर कोई मलामत नहीं

वो मिस्र लौटे बुरी हालत में और ख़ैरात की इल्तिजा की। और फिर यूसुफ़ बोला:

'क़ाल हल 'अलिम्तुम मा फ़'अल्तुम बि-यूसुफ़ व अख़ीहि इज़ अन्तुम जाहिलून — उसने कहा: क्या तुम जानते हो कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया जब तुम ना-दान थे?'

बेटा, इल्ज़ाम में भी उसकी रहमत ग़ौर कीजिए: 'इज़ अन्तुम जाहिलून' — जब तुम

ना-दान थे। **उसने सामना करते हुए भी उन्हें एक बहाना दे दिया।**

'**क़ालू अ इन्नक ल-अन्त यूसुफ़** — उन्होंने कहा: **क्या वाक़ई तुम यूसुफ़ हो? क़ाल अना यूसुफ़ु व हाज़ा अख़ी** — **उसने कहा: मैं यूसुफ़ हूँ, और ये मेरा भाई है** — **क़द मन्नल्-लाहु 'अलैना** — अल्लाह ने यक़ीनन हम पर एहसान किया — **इन्नहू मंय्यत्तक़ि व यस्बिर फ़-इन्नल्-लाह ला युज़ी'उ अज्रल्-मुह्सिनीन** — **बेशक, जो अल्लाह से डरे और सब्र करे — अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करते।**'

बेटा, एक लाइन में पूरी सूरह का नुस्ख़ा: **तक़वा जमा सब्र।** अल्लाह से डरो, और सब्र करो। यही उसने कुएँ में, उस घर में, और क़ैद में किया। और उसी से वो सब पैदा हुआ जो बाद में आया।

उन्होंने इक़रार किया: '**तल्लाहि लक़द आसरकल्-लाहु 'अलैना व इन कुन्ना ल-ख़ाति-ईन** — अल्लाह की क़सम, अल्लाह ने यक़ीनन तुम्हें हम पर तरजीह दी, और बेशक हम ख़ताकार थे।'

और अब, बेटा, वो जुमला जो इस सूरह की बुलंदी है — किसी मज़लूम आदमी के मुँह से निकले सब से अज़ीम माफ़ी के अल्फ़ाज़:

'**क़ाल ला तस्रीब 'अलैकुमुल्-यौम** — **उसने कहा: आज तुम पर कोई मलामत नहीं** — **यग़्फ़िरुल्-लाहु लकुम व हुव अर्हमुर्-राहिमीन** — **अल्लाह तुम्हें बख़्श दे, और वो सब से ज़्यादा रहम करने वाला है।**'

बेटा, इसे जज़्ब कीजिए। इन आदमियों ने उसे क़त्ल करने की कोशिश की। उन्होंने एक बच्चे को कुएँ में फेंका। उन्होंने उसे ग़ुलामी में बेचा। उन्होंने दहाइयों अपने बाप से झूठ बोला और उसे अंधा होते देखा। मिस्र में उस के साथ जो कुछ हुआ उसकी वजह वो थे।

और अब वो उसके सामने खड़े हैं, बे-बस, भूके, पूरी तरह उसके रहम पर — और हर क़ानून और हर रस्म उन्हें सज़ा देने में उसका साथ देती।

और उसने कहा: आज कोई मलामत नहीं। अल्लाह तुम्हें बख़्श दे।

बेटा, और रिवायत है कि जब नबी ﷺ फ़तह-ए-मक्का के दिन उन लोगों के सामने

खड़े हुए जिन्होंने उन्हें सताया, उनके सहाबा को क़त्ल किया, और उन्हें निकाला था — आपने उन से पूछा कि वो क्या समझते हैं आप क्या करेंगे, और फिर फ़रमाया: **जाओ, तुम आज़ाद हो।** और बाज़ रिवायात में है कि आपने यूसुफ़ के यही अल्फ़ाज़ पढ़े।

बेटा, उस जुमले को उस लम्हे के लिए सँभाल कर रखिए जब आख़िर-कार आपका पलड़ा उस शख़्स पर भारी हो जाए जिसे आपने ज़ुल्म करते देखा। **वो लम्हा इसी के लिए है।**

उसने अपनी क़मीज़ भेजी कि अपने बाप के चेहरे पर डाली जाए, और बसारत लौट आई। और क़ाफ़िला अभी पहुँचा भी न था कि याक़ूब बोले: '**इन्नी ल-अजिदु रीह यूसुफ़**' — **मुझे यूसुफ़ की ख़ुशबू आ रही है** — और उनके आस-पास वालों ने कहा कि वो अपनी पुरानी ग़लती में हैं।

और जब वो आए, उन्होंने कहा: '**अ लम अक़ुल लकुम इन्नी अअ्लमु मिनल्-लाहि मा ला तअ्लमून — क्या मैंने तुम से न कहा था कि मैं अल्लाह की तरफ़ से वो जानता हूँ जो तुम नहीं जानते?**'

और बेटों ने कहा: '**या अबानस्-तग़्फ़िर लना ज़ुनूबना इन्ना कुन्ना ख़ाति-ईन** — ऐ हमारे बाप, हमारे गुनाहों की **माफ़ी माँगिए**; बेशक हम ख़ताकार थे।' और उन्होंने कहा: '**सौफ़ अस्तग़्फ़िरु लकुम रब्बी**' — मैं अपने रब से तुम्हारे लिए माफ़ी माँगूँगा।

बेटा, बाप की नर्मी ग़ौर कीजिए: **कोई लेक्चर नहीं, ये गिनाना नहीं कि उन्हें किस चीज़ की क़ीमत चुकानी पड़ी। बस: मैं तुम्हारे लिए दुआ करूँगा।**

ये मेरे ख़्वाब की ताबीर है

ख़ानदान मिस्र आया, और उसने अपने वालिदैन को तख़्त पर बिठाया, और वो उसके सामने सजदे में गिर पड़े — सलाम का वो सजदा जो पहले ज़मानों में जायज़ था, इबादत का नहीं।

'**व क़ाल या अबति हाज़ा तअ्वीलु रुअ्याय मिन क़ब्लु क़द ज'अलहा रब्बी हक़्क़ा — और उसने कहा: ऐ मेरे अब्बा, ये मेरे उस ख़्वाब की ताबीर है जो पहले था। मेरे रब ने**

उसे हक़ीक़त बना दिया।'

बेटा, वो ख़्वाब एक ऐसे लड़के को सुनाया गया था जो शायद सात या आठ साल का था। और ये तब पूरा हुआ जब वो एक ऐसा आदमी था जिसकी दाढ़ी में सफ़ेदी थी। दहाइयों का कुआँ, ग़ुलामी, झूटा इल्ज़ाम, और क़ैद — **और ख़्वाब उन में से हर एक के ज़रिए पूरा हो रहा था।**

'व क़द अह्सन बी इज़ अख़्रजनी मिनस्-सिज्नि व जा-अ बिकुम मिनल्-बद्वि मिम्-ब'अ्दि अन नज़ग़श्-शैतानु बैनी व बैन इख़्वती — और उसने यक़ीनन मेरे साथ भलाई की जब उसने मुझे क़ैद से निकाला और तुम्हें सहरा से ले आया, **उस के बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फूट डाल दी थी।'**

बेटा, इसे ग़ौर से देखिए, क्योंकि ये हैरत-अंगेज़ है। **वो ये नहीं कहता 'मेरे भाइयों ने मुझे कुएँ में फेंकने के बाद'। वो पूरी बात शैतान की डाली हुई फूट की तरफ़ मंसूब करता है — और ग़ौर कीजिए कि वो कुएँ का ज़िक्र तक नहीं करता।**

और एक और चीज़ ग़ौर कीजिए: वो कहता है कि अल्लाह ने उसके साथ भलाई की जब उन्होंने उसे **क़ैद** से निकाला — वो **कुएँ** से निकाले जाने का ज़िक्र नहीं करता। उलमा ने ग़ौर किया कि **उसने हर उस इशारे से बचा जो उसके भाइयों को सब के सामने शर्मिंदा करता।**

बेटा, मुकम्मल माफ़ी का अंदाज़ यही है: **सिर्फ़ बदले से रुक जाना नहीं, बल्कि कहानी को दोबारा उस तरह सुनाने से इनकार करना जो उन्हें शर्मिंदा करे।**

'इन्न रब्बी लतीफ़ुल्-लिमा यशा — बेशक, मेरा रब जो चाहे उस में बारीक तदबीर वाला है — इन्नहू हुवल्-'अलीमुल्-हकीम — बेशक, वही जानने वाला, हिकमत वाला है।'

बेटा, '**लतीफ़**' — वो ज़ात जिसकी तदबीरें इतनी बारीक और इतनी नर्म हैं कि तुम उन्हें काम करते देख नहीं सकते। **एक कुआँ, एक क़ाफ़िला, एक ख़रीदारी, एक इल्ज़ाम, एक क़ैद, एक भुलाई गई गुज़ारिश, एक बादशाह का ख़्वाब — उन में से हर एक एक अलग बे-ताल्लुक़ बदक़िस्मती लगती थी, और मिल कर वो एक ही नक़्शा थी।**

और फिर, बेटा, उसकी आख़िरी दुआ — एक आदमी दुनियावी कामयाबी की बुलंदी पर, और सुनिए वो क्या माँगता है:

'**रब्बि क़द अतैतनी मिनल्-मुल्कि व 'अल्लम्त्तनी मिन तअ्वीलिल्-अहादीस** — **मेरे रब, तूने मुझे हुक्मरानी में से कुछ दिया और मुझे वाक़िआत की ताबीर सिखाई** — **फ़ातिरस्-समावाति वल्-अर्ज़ि अन्त वलिय्यी फ़िद्-दुन्या वल्-आख़िरह** — आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, **तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा कारसाज़ है** — **तवफ़्फ़नी मुस्लिमंव्-व अल्हिक़्नी बिस्-सालिहीन** — **मुझे मुसलमान होने की हालत में मौत दे, और मुझे नेकों के साथ मिला दे।**'

बेटा, उसके पास मिस्र का ख़ज़ाना था, उसका ख़ानदान बहाल, उसका नाम साफ़, उसका ख़्वाब पूरा। **और उसकी दरख़्वास्त थी: मुझे मुसलमान हो कर मरने देना।**

बेटा, यही वो वाहिद तमन्ना है जो बाक़ी हर चीज़ के बाद ज़िंदा रहती है। **ये दुआ याद कर लीजिए।**

और सूरह ख़त्म होती है: '**लक़द काना फ़ी क़ससिहिम 'इब्रतुल्-लि-उलिल्-अल्बाब** — **उनकी कहानियों में यक़ीनन अक़्ल वालों के लिए एक सबक़ है** — **मा काना हदीसंय्युफ़्तरा** — ये कोई घढ़ी हुई बात नहीं — **व लाकिन तस्दीक़ल्-लज़ी बैन यदैहि व तफ़्सील कुल्लि शै-इंव्-व हुदंव्-व रहमतल्-लि-क़ौमिंय्युअ्मिनून** — बल्कि उस की तस्दीक़ जो इस से पहले था, और हर चीज़ की तफ़्सील, और ईमान लाने वालों के लिए **हिदायत और रहमत**।'

बेटा, और एक और चीज़ ग़ौर करने की है, और शायद ये पूरी सूरह का सब से बड़ा सबक़ है।

कहानी को अपने ज़ेहन में फिर पढ़िए। **कुएँ से तख़्त तक, किसी भी मुक़ाम पर, यूसुफ़ (अलैहि0) ने कभी शिकायत नहीं की, किसी को इल्ज़ाम नहीं दिया, या ये नहीं पूछा 'मेरे ही साथ क्यों'। एक बार भी नहीं।** इस सूरह में जब भी वो बोलते हैं, वो या तो दुआ कर रहे होते हैं, या दा'वत दे रहे होते हैं, या अपना काम कर रहे होते हैं, या माफ़ कर रहे होते हैं।

और यही, बेटा, '**अह्सनुल-क़सस**' है — **सब से बेहतरीन कहानी।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. हर अच्छी चीज़ का एलान ज़रूरी नहीं — कुछ नेमतों को ख़ामोशी की हिफ़ाज़त चाहिए।

2. हसद मुक़ाबले से शुरू होता है: 'वो हम से ज़्यादा महबूब है।' उस पहली पैमाइश से बचो।

3. 'सब्रुन जमील' — वक़ार के साथ उठाया गया ग़म, सही पते पर पहुँचाया गया: 'मैं अपना ग़म सिर्फ़ अल्लाह से कहता हूँ।'

4. 'म'आज़ल्लाह' कहो और फिर भागो — और कभी दावा मत करो कि तुम काफ़ी मज़बूत हो; अल्लाह से माँगो कि वो तुम से फेर दें।

5. वो क़ैद से तब तक न निकला जब तक उसका नाम साफ़ न हुआ — बे-गुनाह हो कर बाहर आओ, सिर्फ़ आज़ाद नहीं।

6. 'ला तस्रीब 'अलैकुमुल्-यौम' — उस दिन के लिए ये जुमला सँभाल कर रखो जब आख़िर-कार पलड़ा तुम्हारा भारी हो।

7. कुआँ, ग़ुलामी और क़ैद तख़्त से हट कर रास्ते न थे — वो उस तक का रास्ता थे। तुम्हारा रब 'लतीफ़' है।

रब्बि... अन्त वलिय्यी फ़िद्-दुन्या वल्-आख़िरह, तवफ़्फ़नी मुस्लिमंव्-व अल्हिक़्नी बिस्-सालिहीन। आमीन।